कुमार-बिमल के साहसिक कारनामे

अमावस की रात

हेमेन्द्र कुमार राय

अनुवादक

जयदीप शेखर

Cover Photo Credit: Image By freepik

अमावस की रात

‘कुमार-बिमल’ शृंखला की बँगला साहसिक कहानी
‘अमावस्या’र रात’ का हिन्दी अनुवाद

लेखक
हेमेन्द्र कुमार राय

अनुवादक
जयदीप शेखर

PREVIEW COPY

जगप्रभा

Cover Photo Credit

free-ai-image/ferocious-tiger-nature_65126076: Image By freepik

Copyright © 2024: Translator

Price: ₹ 100.00

-: eBook :-

AMAWAS KI RAAT

(The Night of New Moon)

Hindi translation of the Bengali adventure story ‘Amawasya’r Raat’ from the ‘Kumar-Bimal’ series.

Original author: Hemendra Kumar Roy (1888-1963)

Hindi translation: Jaydeep Shekhar

Self-published by the translator under the titular publication:

JagPrabha

Barharwa (SBG), JH- 816101

jagprabha.in | jagprabha.bhw@gmail.com

***

हेमेन्द्र कुमार राय

(1888 - 1963)

बँगला में किशोर-साहित्य के एक लोकप्रिय कथाकार। बाल-किशोरों के लिए सैकड़ों कहानियों एवं लघु उपन्यासों की रचना की- बड़ों के लिए भी बहुत कुछ लिखा। 1930 से 1960 के दशकों में उनकी कहानियों के बिना बाल-किशोर पत्रिकाएं अधूरी-सी लगती थीं। मुख्यरूप से उन्होंने दुस्साहसिक (Adventure), जासूसी (Detective) और पारलौकिक (Supernatural), कहानियाँ लिखी हैं। कहानियों में रहस्य (Mystery), रोमांच (Thrill) और भय (Horror) का ऐसा पुट होता है कि दम साधकर कहानियों को पढ़ना पड़ता है। कुछ कहानियाँ खजाने की खोज (Treasure hunt) और वैज्ञानिक कपोल-कल्पना (Science-fiction) पर भी आधारित हैं। उनकी रची 'कुमार-बिमल' और 'जयन्त-माणिक' शृंखलाएं अपने समय में बहुत लोकप्रिय हुई थीं- पहली दुस्साहसिक कहानियों की तथा दूसरी जासूसी कहानियों की शृंखला है। उनकी रची पारलौकिक कहानियों को पढ़ने का अलग ही रोमांच है।

***

अखबार की रपट 6
बाघ का आतंक 7
पटलबाबू, चन्द्रबाबू और मोहनलाल 9
आधुनिक व्याघ्र 13
आदमी का शिकार.. 15
काले-काले हाथ 19
बाघ के गड्ढे में.. 22
पटलबाबू का मकान 25
मौत से सामना 31
गहराता रहस्य.. 37
क्या यही भूलू डकैत था? 41
फिर वही रात.. 47
आश्चर्य रहस्य.. 53
मोहनलाल गिरफ्तार.. 57

अमावस की रात

अखबार की रपट

'बँगदेश' एक साप्ताहिक पत्रिका थी। उसमें निम्न रपट छपी थी–

'सुन्दरबन के निकट मानसपुर है। मानसपुर को एक बड़ा गाँव या एक छोटा-मोटा शहर कहा जा सकता है, क्योंकि वहाँ प्रायः तीन हजार लोगों का वास है।

'हाल-फिलहाल मानसपुर के लोग त्राहिमाम पुकार रहे हैं। प्रत्येक अमावस्या की रात वहाँ एक अलौकिक विभीषिका घट रही है।

'वास्तविक मामला क्या है– कोई भी इसका अन्दाजा नहीं लगा पा रहा है। एड़ी-चोटी का जोर लगाकर जाँच-पड़ताल करके भी पुलिस कुछ विशेष पता नहीं लगा पायी है। गाँव के चारों तरफ कड़ा पहरा बैठा दिया गया है। बन्दूकधारी सिपाही सदा मुस्तैद रहते हैं। इसके बावजूद प्रत्येक अमावस्या की रात मानसपुर से एक-एक कर आदमी लापता हो रहे हैं।

'आज एक साल से यह अद्भुत घटना घट रही है। विगत बारह अमावस्या की रातों में बारह लोग लापता हो चुके हैं। प्रत्येक दुर्घटना की रात एक आश्चर्यजनक बात नजर आयी है। मानसपुर सुन्दरबन के नजदीक होने पर भी यहाँ बाघ का उत्पात कभी ज्यादा नहीं रहा, लेकिन दुर्घटना से पहले ही अब घटनास्थल के चारों तरफ बार-बार बाघ की गर्जना सुनायी पड़ती है। ठीक अमावस्या की रात के अलावे और किसी भी दिन इस अद्भुत बाघ की गर्जना सुनायी नहीं पड़ती है! यह बाघ कहाँ से आता है और कहाँ गायब हो जाता है– यह कोई नहीं जानता। आज तक किसी ने भी आँखों से उसे देखा नहीं है।

'और एक आश्चर्यजनक बात यह है कि जो लापता हुए हैं, उनमें से एक भी पुरूष नहीं है! सभी स्त्रियाँ हैं और प्रत्येक के शरीर पर बहुमूल्य गहने थे।

'पुलिस ने शुरू में मान लिया था कि इन सारे करतूतों के पीछे कोई आदमखोर बाघ है, लेकिन विभिन्न कारणों से पुलिस के मन में फिलहाल अन्य प्रकार का सन्देह जन्मा है। सुन्दरबन के अन्दर भूलू डकैत का अड्डा है और उसका दल इस इलाके में अक्सर अत्याचार करता है। बहुत कोशिशों तथा इनाम

घोषित करने के बावजूद पुलिस आज तक भूलू डकैत को गिरफ्तार नहीं कर पायी है। पुलिस का मानना है कि मानसपुर की इन घटनाओं के लिए यह भूलू डकैत ही जिम्मेदार है।

'कौन जिम्मेदार है और कौन जिम्मेदार नहीं है– यह हम लोग नहीं जानते, लेकिन यह साफ समझ में आ रहा है कि मानसपुर के घटनाक्रम में कोई आश्चर्यजनक रहस्य है। हम लोग बीसवीं सदी के न होते, तो इन मामलों को शायद भूतिया काण्ड समझ लेते। डकैत डकैती करता है, ठीक अमावस्या की रात चोरों की तरह आकर वह एक-एक स्त्री को उठाकर क्यों ले जाने लगा भला? और फिर यह बाघ का रहस्य क्या है? किस देश का बाघ है यह– क्या यह पंचांग पढ़ना जानता है? पोथी-पत्र पढ़कर ठीक अमावस्या की रात मानसपुर के इलाके में गर्जन-गान करने यह आता है? कौन देगा इन प्रश्नों के उत्तर?'

बाघ का आतंक

पत्रिका को टेबल पर रखते हुए कुमार मन-ही-मन बोल उठा, 'इन प्रश्नों के उत्तर देने की कोशिश करूँगा मैं। .....'बँगदेश' के रिपोर्टर ने ठीक ही अनुमान लगाया है, इन सबके पीछे जरूर कोई रहस्य है– हाँ, आश्चर्यजनक कोई रहस्य! एक के बाद एक बारह महिलाएं लापता, अमावस की रात, अद्भुत बाघ का आविर्भाव व अन्तर्धान, इन पर भूलू डकैत का दल। .....काश कि बिमल अभी साथ होता, लेकिन आज सात-आठ दिनों से रामहरि को लेकर कहाँ जो डुबकी मारकर वह बैठा हुआ है– शायद ऊपरवाले को भी यह पता नहीं है!'

एक पंचांग लेकर उस पर नजर दौड़ाकर कुमार फिर सोचने लगा, 'हूँ, परसों फिर अमावस की रात आयेगी, मानसपुर से फिर शायद एक अभागन नारी लापता होगी! मेरी तो अभी ही उड़कर वहाँ जा पहुँचने की इच्छा हो रही है! ऐसे एक एडवेंचर का मौका हाथ से जाने तो नहीं दिया जा सकता। बिमल की किस्मत खराब है, अपनी ही गलती से वह इस बार मौका चूक रहा है। क्या करूँ मैं? .....बाघा, बाघा!'

बाघा उस वक्त कमरे के एक कोने में बैठकर मक्खियों के झुण्ड के साथ भीषण युद्ध कर रहा था। मक्खियों की इच्छा थी कि बाघा के शरीर को वे खेल का मैदान बनाकर खेलें, लेकिन अपने शरीर को मक्खियों की मस्ती की जगह

बनाने की कल्पना से ही बाघा गुस्से से पागल हो उठा था। बड़ा-बड़ा मुँह फाड़कर, दाँत-मुँह भींचकर वह एक-एक बार में एकाधिक मक्खियों को निगल चुका था, लेकिन मक्खियाँ भी कहाँ छोड़ने वाली थीं, जान की परवाह छोड़ भिन-भिन-भिन-भिन करते हुए बाघा के सिर से लेकर दुम तक बार-बार वे छा जा रही थीं। जो बाघा जल-थल-नभ में कितने ही मानव-दानव और अद्भुत जीवों से मुकाबला कर विजयी हुआ था, बिमल और कुमार के साथ जिसका नाम सारे बँगाल में प्रसिद्ध हो गया था, उसका तुच्छ मक्खियों के एक झुण्ड के आक्रमण से किस तरह हाल-बेहाल हो रहा था– यह देख शत्रुओं को भी दया आ जाती! ऐसे में कुमार की पुकार सुनकर वह शरीर और पूँछ झाड़ते-झाड़ते जल्दी से उसके पास जाकर सामने खड़े होकर हाँफने लगा।

कुमार बोला, "बाघा प्यारे, बिमल भी नहीं है और रामहरि भी नहीं– केवल तुम और मैं! अमावस की रात, बाघ की गर्जना, डकैतों का दल, लापता होते लोग! सुनकर क्या तुम्हें डर लग रहा है?"

बाघा ने कान खड़े कर मालिक की सारी बातों को ध्यान से सुना। वह क्या समझा– पता नहीं, लेकिन बोला, "भौं-भौं-भौं!"

"बाघा, वह कोई ऐरू-गैरू बाघ नहीं है– क्या समझे? वह तुमसे बहुत चालाक है! वह तिथि-नक्षत्र विचार करके काम करता है! उसके साथ मुकाबला कर सकेंगे हम?"

"भौं-भौं-भौं!"

"इन सबके अलावे है– भूलू डकैत का दल। पुलिस ने भी उनसे हार मान ली है। सिर्फ तुम्हारी और मेरी परवाह करेंगे वे?"

"भौं-भौं-भौं!" कहते ही बाघा ने मुँह घुमाकर गपाक्-से एक मक्खी को निगल डाला।

एक लिफाफ और चिट्ठी लिखने का एक कागज निकालकर कुमार लिखने बैठ गया–

'भाई बिमल,

'एक बार एक जगह से लोगों के समूह के समूह गायब होने की खबर सुनकर हम लोग वहाँ देखने गये थे, लेकिन उस कौतूहल के चक्कर में बन्दी बनकर हम लोगों को जाना पड़ा था पृथ्वी छोड़कर मंगल ग्रह पर।

'इस बार भी मानसपुर में एक के बाद एक लोग (लेकिन केवल महिलाएं) लापता हो रहे हैं। खबर सुनने के बाद हाथ पर हाथ धरे बैठना मुश्किल हो गया है। इसलिए मैं और बाघा– दोनों घटनास्थल के लिए रवाना हो रहे हैं। नहीं पता, इस बार भी हमें फिर पृथ्वी छोड़ना होगा या नहीं!

'साप्ताहिक पत्रिका की रपट भी इस लिफाफ में रख रहा हूँ। इसे पढ़कर तुम समझ सकते हो कि क्यों मैं तुम्हारे लिए इन्तजार नहीं कर सका। आगामी परसों अमावस्या है, आज रवाना नहीं होने पर वक्त पर मानसपुर नहीं पहुँच पाऊँगा।

'बिमल, तुम्हारे लिए अफसोस हो रहा है। इस बार के 'एडवेंचर' में तुम बाद पड़ गये। अब किया ही क्या जा सकता है। यदि मैं सही-सलामत लौटा, तो मुझसे सारी कहानी सुन लेना।

'इति–

'तुम्हारा

'कुमार।'

पटलबाबू, चन्द्रबाबू और मोहनलाल

अगले दिन कुमार मानसपुर में हाजिर हुआ।

वहाँ उस वक्त भय का वातावरण बना हुआ था।

आगामी कल अमावस्या थी और वह अनजाना शत्रु कल फिर किस घर में धावा बोलेगा– यह कोई नहीं जानता था! सभी अभी से तैयार हो रहे थे। धनी लोग घर के चारों तरफ डबल करके पहरा बैठा रहे थे, साधारण गृहस्थों में कोई-कोई सपरिवार दूसरी जगह जा रहे थे, तो कोई-कोई घर की स्त्रियों को दूसरे गाँव भेज रहे थे– क्योंकि इस अद्भुत शत्रु की निगाह केवल स्त्रियों पर होती थी।

शहर के युवकों ने सभी मुहल्लों में 'मुहल्ला रक्षा समितियों' का गठन कर रखा था और किस तरह आसन्न खतरे से निपटा जाय– इसे लेकर वे योजनाएं बनाने एवं तर्क-वितर्क करने में व्यस्त थे।

चारों तरफ अभी से ही सरकारी चौकीदारों की संख्या दुगनी-तिगुनी हो गयी थी।

कुमार ने पहले घूमकर सारे मानसपुर की हालात का अच्छे-से जायजा लिया।

ज्यादातर चौक-चौराहों पर एक सज्जन उसे बार-बार उसे नजर आये।

सज्जन का व्यक्तित्व प्रभावशाली था और वे व्यस्त भाव के साथ सारे शहर में भाग-दौड़ करते फिर रहे थे तथा किस दिशा से खतरा आ सकता है– इस सम्बन्ध में रक्षा-समितियों के युवकों को नाना प्रकार के परामर्श दे रहे थे।

दो-एक लोगों से पूछकर कुमार ने जाना कि उन सज्जन का नाम पटलबाबू था। धनी न होने पर भी गाँव के वे एक दबंग किस्म के व्यक्ति थे और मुहल्ला रक्षा समितियों का खर्चा-पानी वे ही उठा रहे थे।

पटलबाबू की आँखों में कुमार ने ऐसा कुछ देखा, जैसा उसने किसी और इन्सान की आँखों में नहीं देखा था।

पटलबाबू का रंग भैंस-जैसा काला था, लम्बाई उनकी बहुत कम थी, लेकिन चौड़ाई अस्वाभाविक रूप से ज्यादा थी। सिर टकला था– इस्पात के समान चमकता हुआ, लेकिन होंठों के ऊपर और गालों पर जानवरों-जैसे बड़े-बड़े बाल थे; मानो लम्बी, घनी दाढ़ी-मूँछों द्वारा सिर के बालों के अभाव को वे पूरा कर लेना चाहते हों।

लेकिन पटलबाबू के चेहरे पर ध्यान आकर्षित करती थीं उनकी दोनों आँखें! पटलबाबू के हाथ-पाँव बहुत चल रहे थे, उनका मुँह अनवरत बोले जा रहा था, लेकिन उनकी दोनों आँखें मानो किसी लाश की आँखें थीं! श्मशान में चिता की आग के बीच एक मुर्दे में मानो शैतानी आत्मा प्रवेश कर गयी हो और वह मुर्दा जीवित होकर सबकी ओर पलकें झपकाते हुए देख रहा हो– पटलबाबू की आँखों को देखकर कुछ ऐसा ही भाव कुमार के मन में उठने लगा।

चारों तरफ सब देख-सुन लेने के बाद कुमार मानसपुर थाने के इन्सपेक्टर चन्द्रबाबू की खोज में चला। कोलकाता में ही उसे यह जानकारी मिल गयी थी कि चन्द्रबाबू के बड़े बेटे अशोक के साथ उसने स्कूल और कॉलेज में एक साथ बहुत दिनों तक पढ़ाई की है। अशोक अभी कोलकाता में था। समझदारी दिखाते हुए कुमार उससे चन्द्रबाबू के नाम एक चिट्ठी लिखवाना नहीं भूला था, जिसमें कुमार का परिचय था। वह समझ रहा था कि मानसपुर के रहस्य पर से पर्दा उठाने में चन्द्रबाबू से ही सबसे अधिक मदद मिलने की सम्भावना थी।

थाने जाकर उसने परिचयपत्र वाली चिट्ठी अन्दर भेजवा दी। थोड़ी ही देर में उसका बुलावा आया।